om-11 INITIAL_Page 1 and 2 12-08-2014 11:59 Page 10

आज़ादी...?

- ब्र.कु. निधि,सर्वोदय नगर,कानपुर

देश को स्वतंत्रता मिले आधा दशक से भी ज़्यादा का समय हो चुका है, पर क्या सही मायनों में हम आज़द हुए हैं। आज भी भारत के 76 प्रतिशत लोग भुखमरी और बदहाली का जीवन जीने को मजबूर हैं। सरकार व प्रशासन सालों से केवल खोखले एवं झूठे वायदे करते आए हैं। आज़ादी के इतने वर्ष बीत जाने पश्चात् भी न ही गरीबी दूर हुई न बेरोज़गारी। कालाबाज़ारी, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, अनैतिकता आदि हमारे संस्कारों में शामिल हो गए हैं। कमर-तोड़ महंगाई से जनता मर रही है। लेकिन शासकों के पास इन सबके लिए कोई पुख्ता योजनाएँ नहीं हैं। दिन ब दिन अमीर होते देश में आम आदमी इस महंगाई के दौर में समान्य ज़रूरतें पूरी करने में हारता नज़र आ रहा है। यह हमारे लिए आत्म-मंथन का समय है। अंग्रेजी साहित्यकार मार्क दुष्येन ने कहा है कि ''भारत आदम संस्कृति की जननी है, इंसानी भाषा का जन्मदाता, इतिहास की माँ, परंपराओं की परदादी। हमारी बेहद बेशकीमती व उपयोगी वस्तुएँ इस भूमि में संजोई हुई हैं।'' स्वतंत्रता शब्द दो शब्दों से बना है 'स्व' और 'तंत्र'। 'स्व' का अर्थ है स्वयं से तथा 'तंत्र' अर्थात् व्यवस्था। तात्पर्य है अपने आप को जानने व पहचानने से।

क्या है आम आदमी के लिए स्वतंत्रता?

आज ही के दिन 15 अगस्त,1947 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लालकिले के प्राचीर से आज़ादी का उद्घोष किया और कहा, ''अर्धरात्रि को जब विश्व सोएगा तब हिन्दुस्तान स्वतंत्रता व ज़िंदगी का आनंद लेगा'' और अंत में कहा कि अति प्राचीन, अखण्ड एवं चिर यौवन भारत भूमि को हम नमन करते हैं, वही देश जो स्वयं की पुन: खोज करता है। प्रश्न यह है कि हम आज़ादी को क्यों इतना महत्व देते हैं? क्या वास्तविक मायने हैं भारत की जनता के लिए स्वतंत्रता के। आज़ाद होना मतलब स्वयं की संभाल करना, उस मातृभूमि के मूल्यों को बनाए रखना जिसने हमें पाला-पोसा, अपनी सांस्कृतिक विरासत व जड़ों से जुड़े रहना और ऐसे नियम-कायदे बनाना जो हमें जीवन में आगे बढ़ाएँ। स्वतंत्रता दिवस पर अपनी भारत माता को गौरवांवित करने हेतु कार्य करना चाहिए जो हमारा एक अविस्मरणीय इतिहास रहा है। साथ ही बुद्धिजीवि वर्ग से दोस्ती करके तथा देश के जो मूल्यवान संसाधन हैं, उनका सदुपयोग करके आम जन अपना जीवन स्तर सुधार सकते हैं और अपना श्रेष्ठ योगदान समाज के लिए कर सकते हैं। इसी संदर्भ में गर्ल्स होस्टल संचालक कांता बहन कहती हैं कि ''विचारों की पवित्रता सच्ची आज़ादी का परिचारक है। स्वतंत्रता मिलने पर उसका उपयोग कर उपलब्धियाँ हासिल करनी चाहिए। हम भी जीवन अच्छे से जीएँ व दूसरों के भी सहयोगी बनें।'' लेकिन निरंतर विकसित होते भारत की आम जनता अपनी हालत पर आंसू बहाने को मजबूर है। इसलिए आज आम जन स्वतंत्र देश में रहकर पराधीन एवं पराजित महसूस करता है। आज़ादी के क्या मूल रूप से मायने होने चाहिए, वह भूल गया है। ऐसे में धूमिल की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं, ''क्या आज़ादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है, जिन्हें एक पहिया ढ़ोता है''।

युवाओं के लिए क्या है आज़ादी?

आज का भारतीय युवा अपने अनुसार जीवन जीने को ही आज़ादी मानता है। वह दो वर्गों में बँटा दिखाई देता है। एक तरफ कुछ कर गुज़रने की उसमें बेहतरीन संभावनाएँ नज़र आती हैं चाहे कॉर्पोरेट सेक्टर हो या राजनीति, फिल्म इंडस्ट्री इत्यादि हर जगह युवाओं ने अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज़ कराई है। वहीं दूसरी तरफ वह स्वतंत्रता के नए और कुत्सित अर्थ को ही असली आज़ादी मान बैठा है। फास्ट फूड खाना, डिस्को थेक जाना, सेक्स, हिंसा, अश्लील कपड़े पहनना इत्यादि को भी स्वतंत्रता की परिभाषा मान बैठे हैं बहुत से युवा। जो किसी भी काल में आज़ादी के मायने नहीं होते। वर्तमान फिल्मों और टी.वी. के बेतुके शोज़ ने युवा वर्ग को दिग्भ्रमित किया है। कम मेहनत व कम समय में करोड़पति बनने का झूठा ख्वाब दिखाकर उनकी इच्छाओं को हवा दी जा रही है। यथार्थ में जब वह पूरी नहीं होती तो युवकों की बौखलाहट कुंठा में बदल जाती है। अधिकारों की आज़ादी के नाम पर युवा फिर गलत रास्ते पर चलते हैं।

महिलाओं के लिए क्या है स्वतंत्र होना?

आज जब सारा विश्व अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मना रहा है और देश में भी नारी सशक्तिकरण की बातें होती रहती हैं, संसद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का बिल पड़ा है, ऐसे में प्रश्न उठता है कि

''क्या आज़ादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है, जिन्हें एक पहिया ढ़ोता है''।

क्या भारतीय महिलाएं सही मायने में स्वतंत्र व पूर्ण रूप से आज़ाद हैं। सिक्के का एक पहलू यह है कि भारतीय नारी ने कला से लेकर विज्ञान के क्षेत्र जैसे नासा की सुनीता विलियम, पेप्सिको की चेयरपर्सन इंद्रा नुई, बायोटेक की सुनीता राव, वर्तमान मानव संसाधन मंत्री एवं एक्टर स्मृति ईरानी, बॉलीवुड अदाकारा माधुरी दीक्षित, टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्ज़ा इत्यादि की काबिलियत का डंका सारी दुनिया में पिट रहा है। देश की प्रगति व रक्षा-क्षेत्र में भी महिलाओं के योगदान को झुठलाया नहीं जा सकता। परंतु सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि आज भी लड़कियों तथा महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा, यौन-उत्पीड़न, बलात्कार, पढ़ाने-लिखाने पर रोक-टोक, जलाना, चरित्र पर दोषारोपण करना, मनहूस कहना, कन्या भ्रूण हत्या आदि घिनौने कृत्य खुले आम हो रहे हैं। आज भी शिक्षित परिवार एक ही पुत्री या पुत्रियाँ होने पर यह कहते हुए सुने जाते हैं कि ''अब बेटी ही हमारा बेटा है'', अर्थात् बेटा को ही ऊँच माना जाता है। लड़की के जीवन से जुड़े अधिकांश निर्णय अब भी माँ-बाप ही लेते हैं। किसी ऑफिस में उच्च पद पर आसीन महिला के नीचे कार्य करने वाले पुरुष सहयोगी क्यों उसे पूर्ण सहयोग नहीं देते? सामाजिक बंधनों, मान्यताओं व सोच के स्तर पर नारी जाति आज भी स्वतंत्र नहीं है। भले ही वह घर हो या बाहर, हर जगह महिलाओं को कमज़ोर साबित करने व बंदिश लगाने वालों की कमी नहीं है। आज़ादी के असली मायने तो तब समझ में आते हैं जब समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं को स्वेच्छा से कार्य में भागीदारी का अधिकार मिले तथा हर तबके की स्त्रियों को एक जैसी सुविधाएं तथा अधिकार हासिल हों। संगीता बहन स्वतंत्रता दिवस को महिला स्वतंत्रता से जोड़कर देखती हैं। उनका कहना है कि जब से शिव बाबा/परमात्मा शिव की बनी हूँ, मैं आत्म-निर्भर हो गई हूँ। अब अपने कार्य स्वयं कर सकती हूँ, दूसरों की तरह मैं भी अपनी शक्तियों का उपयोग करना सीख गई हूँ।'' यही सोच अपनाकर अगर हर देशवासी जीवन जीए तो भारत को पूर्ण स्वतंत्र साम्राज्य बनने से कोई नहीं रोक सकता।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि घर-गृहस्थी का काम करने की ज़िम्मेदारी पुरुष और महिला दोनों की है। 90 प्रतिशत आधुनिक और आज़ाद महिलाएं घर पहुंचते ही रसोई में घुस जाती हैं, मगर 2 प्रतिशत आम पुरुष भी ऐसा नहीं करते। परंतु आज आज़ादी के नाम पर औरतों का भड़काऊ कपड़े पहनना, उत्तेजक भाव-भंगिमा और मेक-अप कर पर-पुरुषों को रिझाना, स्ट्रिपर्स नाइट का आयोजन, अपनी संस्कृति-सभ्यता से अलगाव एवं टूटते-बिखड़ते परिवार, इन सब में भारतीय महिलाओं का भी दोष है। आज़ादी या स्वतंत्रता के सही मायने अच्छे संस्कारों, उपयुक्त सिद्धांतों व उच्च मूल्यों के साथ जीवन जीना और परिवर्तन लाना है न कि मनमानी, उच्छृंखलता आज़ादी का पैमाना हो सकती है।

कैसी हो सच्ची आज़ादी?

आज़ाद होने का सीधा अर्थ है सबसे पहले खुद की देखभाल करना व खुश रहना, अपने मूल्यों और संस्कार जो हमें धरोहर में मिले हैं, को सहेजकर रखना,अपनी गहरी जड़ों तथा विरासत से सदा जुड़े रहना, जीवन में आगे बढ़ने हेतु एवं बदलाव लाने हेतु ईमानदारी से प्रयासरत रहना। आज़ादी या खुली हवा में सांस लेने के सही मायने हम तभी समझ पाएंगे जब हर भारतीय शासकों तथा व्यवस्था की कमी-कमज़ोरियों का हर समय रोना न रोकर, देश और इसकी संपदा को खुशहाल व संपन्न बनाने में सम्पूर्ण योगदान दें। तिरंगा फहराने के पीछे भी यही भावना निहित है कि देशवासी भाईचारे, प्रेम व दूसरों और स्वयं के लिए शुभ संकल्पों के साथ स्वछंद जीवन जीएं। तिरंगे के मध्य में मौजूद सफेद रंग उस रोशनी को दर्शाता है जो हमें सत्य पथ पर चलने की राह दिखाता है। केन्द्र में इंगित अशोक चक्र ''धर्म-चक्र'' का प्रतीक है जो सत्यता, धर्म तथा मूल्यों से भरपूर जीवन जीने की प्रेरणा देता है। तिरंगे में मौजूद नीली तीलियों का पहिया शांतिप्रिय बदलाव का द्योतक है। वहीं तिरंगे का केसरिया रंग शासकों को सत्ता से अनासक्त व विरक्त रहने का संदेश देता है। जीवन में अच्छे आचार-विचार, श्रेष्ठ मूल्य एवं शुभ कामनाएं सभी के लिए सीखकर ही सच्चे रूप में हम आज़ादी की ठंडी बयार का अनुभव कर सकते हैं।

इन्दौर-ओमशांति भवन। लाकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनिता,ब्र.कु.शंकुतला।

मेरठ-दिल्ली रोड। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के समापन के पश्चात् समूह चित्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कोरियोग्राफर पं.पुलकित मिश्रा, ब्र.कु. श्वेता तथा बच्चे।

नाभा-पंजाब। ब्र.कु. अशोक के तपस्वी जीवन के 25 वर्ष पूरे होने पर उनका सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. गुलशन, रमेश मोदी, जीवन शाही, रमेश गर्ग तथा शहर के गणमान्य नागरिक।

अहमदाबाद। साबरमती सेंट्रल जेल में बंदीवान भाई-बहनों के लिए आयोजित मेडिकल कैम्प का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए जेल अधीक्षक आर.एस. भगोरा, डॉ. मेहुल शाह, डॉ. मुकेश पटेल, प्रो. नीता पटेल, डॉ. चैतन्य पटेल तथा अन्य।

पावीजेतपुर-गुज.। वैष्णव सम्प्रदाय के धर्मगुरु द्वारकेश जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मोनिका, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

देहरा। रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डी.एफ.ओ. जय चंद कटोच, ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. शिवानी तथा स्टाफ।